हरे चारे के लिये नेपियर घास की उन्नत शस्य

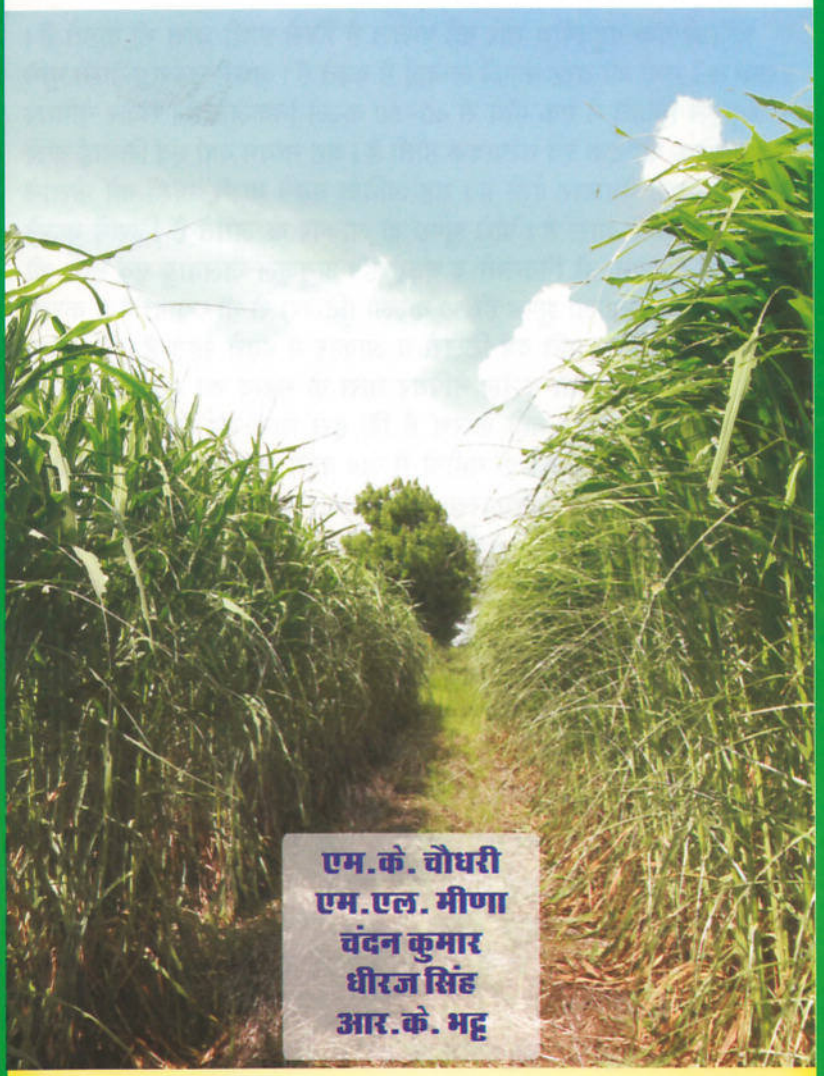

एम.के. चौधरी
एम.एल. मीणा
चंदन कुमार
धीरज सिंह
आर.के. भट्ट

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान
(आई.एस.ओ. 9001 : 2008)

कृषि विज्ञान केन्द्र

पाली-मारवाड़ (राज.) 306401

✆: (02932) 256771

कीट नियंत्रण :- इस चारा फसल में दीमक के प्रकोप का नियंत्रण सिंचाई द्वारा किया जा सकता है। इस फसल पर कभी–कभी टिडडों का आक्रमण होता है। परन्तु इसके नियंत्रण के लिये रसायन का प्रयोग नहीं करना चाहिये क्योंकि इस घास को बार–बार काट कर पशुओं को खिलाया जाता है। रसायन छिड़कना पशुओं के लिये नुकसानदायक हो सकता है।

अंतराशस्य :- हरे चारे के लिये नेपियर घास की अधिक सर्दियों में एवं अधिक गर्मियों में वृद्धि दर कम होती है अतः इस समय में चारे की कमी को पूरा करने के लिये घास की लाइनों के बीच सर्दियों में रिजका/सेंजी तथा गर्मियों में चँवला, ग्वार, दलहनी फसलों को उगाना चाहिये ताकि उस समय विशेष पर चारे की कमी को पूरा किया जा सके।

कटाई :- नेपियर घास एक बार लगाने पर 4–5 वर्ष तक लगातार हरा चारा देती रहती है। चारे की उपज दूसरे वर्ष अधिक होती है तथा तीसरे वर्ष कम होने लगती है। हरे चारे की प्रति वर्ष उत्पादकता बनाये रखने के लिये फरवरी व मार्च माह में घास के ढूंढो को रोटोवेटर मशीन से भूमि की सतह से एक साथ कटाई करके नत्रजन उर्वरक का प्रयोग करते रहना चाहिये। इससे पुर्नवृद्धि काफी तेज होती है व नई फसल से उपज भी पहले जैसी बनाये रख सकते है।

घास रोपण के 2.5 माह बाद प्रथम कटाई की जाती है। बाद की कटाईयां गर्मी में जब घास 1.25 मीटर बढ़ने पर करें जब फसल 40–50 दिन की हो जाती है। यही कटाई बरसात में 1.5 मीटर घास के बढ़ने पर करें यह अवस्था लगभग 30–35 दिन में आ जाती है।

घास के पौधों की कटाई भूमि सतह से लगभग 12–15 से.मी. की ऊँचाई से करनी चाहिये। उचित ऊँचाई से कटाई करने पर पुर्नवृद्धि शीघ्र एवं अधिक होती है जिससे प्रति कटाई हरे चारे का उत्पादन बढता है। मृदा उर्वरता का उचित प्रबन्ध एवं उन्नत कृषि तकनीक अपनाकर नेपियर घास से प्रति वर्ष 6–7 कटाईयाँ प्राप्त की जा सकती है।

उपज :- मृदा उर्वरता प्रबन्ध, फसल प्रबन्ध एवं ली जाने वाली कटाईयों की संख्या के आधार पर औसतन 120 से 180 टन हरा चारा एवं 27 से 40 टन सूखा चारा प्रति हैक्टेयर प्रति वर्ष प्राप्त किया जा सकता है।